मामा राजपाल : चाहे जहां शराब के ठेके, अधिकारियों का साथ

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) ग्रीन बेल्ट पर चाहे भाजपा कार्यालय बने या शराब के अहाते, नेताओं-दलालों के आज्ञाकारी अधिकारियों को नजर नहीं आते, आएं भी क्यों जब इसके एवज में उन्हें सुविधा शुल्क से लेकर शराब और नेताओं का संरक्षण हासिल होता है।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार ग्रीन बेल्ट पर अतिक्रमण कर शहर में चालीस शराब अहाते धड़ल्ले से चल रहे हैं। यह अहाते कोई आज से नहीं चल रहे, 2019 में भी नेशनल ग्रीन ट्रिब्युनल (एनजीटी) ने ग्रीन बेल्ट पर चल रहे 21 से ज्यादा अहातों को हटाने का सख्त आदेश जारी किया था। हटाया जाना तो दूर चार साल में इनकी संख्या लगभग दो गुनी हो गई। शराब कारोबारी ग्रीन बेल्ट जैसी सार्वजनिक जगहों पर अहाते खोलने की हिम्मत यूं ही नहीं कर पाते, उन्हें केंद्रीय मंत्री किशनपाल गूजर के मामा राजपाल का साथ मिला हुआ है। इन कारोबारियों को ठेका दिलवाने से लेकर ग्रीन बेल्ट पर कब्जा करवाने तक की सहूलियत मामा ही दिलाता है। यह काम वह कोई मुफ्त या समाजसेवा के लिए नहीं करता, बल्कि ठेकेदार को आमदनी पर कमीशन चुकाना पड़ता है, यानी ये अहाते मामा की अघोषित पार्टनरशिप में चलते हैं। इसके बदले मामा इन ठेकेदारों को हूडा, नगर निगम और पुलिस से संरक्षण दिलाता है। पुलिस सूची में घोषित दलाल मामा राजपाल की अधिकारी भी हां में हां इसलिए मिलाते हैं कि एक तो वह केंद्रीय मंत्री किशनपाल का मामा है दूसरे दलाल के रूप में वह इन अधिकारियों को ऊपरी कमाई भी करवाता है।

अधिकारियों को मालूम है कि राजपाल को नाराज करना यानी किशनपाल गूजर से बैर मोल लेना। मंत्री का संरक्षण, मामा का सहयोग और ठेकों से मुफ्त शराब और सुविधा शुल्क जैसी सहूलियत मिले तो कौन अधिकारी कार्रवाई करना चाहेगा। यही कारण है कि एनजीटी के आदेश के बाजवूद ग्रीन बेल्ट पर ठेकों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। आय बढ़ाने की जद्दोजहद में लगे आबकारी विभाग के अधिकारी ठेके का लाइसेंस जारी करते समय यह भी नहीं देखते कि कारोबारी के पास ठेका खोलने के लिए जमीन है भी या नहीं, रही बात नगर निगम और हूडा के अधिकारियों की तो उनकी आखों पर राजपाल मामा के रसूख और नोटों का चश्मा चढ़ा है।

एनजीटी के आदेश पर कार्रवाई रिपोर्ट भेजने का हुनर तो इन अधिकारियों को आता ही है। 2019 में एनजीटी ने ग्रीन बेल्ट को मुक्त कराने का आदेश जारी किया तो नगर निगम ने उसे भी गुमराह कर दिया। 2020 में तोड़फोड़ का नाटक करने के बाद अधिकारियों ने एनजीटी को कार्रवाई रिपोर्ट भेज दी। कार्रवाई के तुरंत बाद मामा के चहेतों ने फिर से ग्रीन बेल्ट पर कब्जा कर डाला। कई जगहों पर ठेका तो थोड़ी सी जगह में खुला लेकिन पीने वालों को सहूलियत देने के लिए ग्रीन बेल्ट के और ज्यादा इलाके पर कब्जा कर डाला गया।

हरियाणा को नशा मुक्त करने के लिए साइकलाथॉन का नाटक कर रहे मुख्यमंत्री खट्टर को यहां ग्रीन बेल्ट उजाड़कर बनाए जा रहे शराब ठेकों की जानकारी नहीं हो यह नामुमकिन है लेकिन उनमें अपनी पार्टी के नेताओं की नाराजगी मोल लेने की हिम्मत नहीं है।

ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल पर रोहतक मेडिकल यूनिवर्सिटी का छापा

तीन गाड़ियों में लद कर आई टीम को एक सुई भी न मिली

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) दिनांक 12 सितम्बर, मंगलवार को रोहतक स्थित मेडिकल यूनिवर्सिटी से अचानक आई टीम ने एनएच तीन स्थित मेडिकल कॉलेज अस्पताल पर प्रात: साढ़े दस बजे ठीक ऐसे छापा मारा जैसे कि यहां कोई बहुत बड़ा अपराधी गिरोह सक्रिय हो।

यद्यपि ईएसआई संस्थान के अधिकारी इस पर कुछ भी बोलने से बच रहे हैं लेकिन भरोसेमंद सूत्रों के अनुसार राजमुंद्री (आंध्रप्रदेश) के किसी सांसद ने एनएमसी (नेशनल मेडिकल कमीशन), दिल्ली स्थित ईएसआईसी मुख्यालय व हरियाणा सरकार को एक पत्र लिखकर संस्थान पर अनेकों झूठे व मनगढंत आरोप लगाये थे। मिली जानकारी के अनुसार पत्र में कहा गया था कि यहां पर गैरकानूनी तौर पर 70 वर्ष से अधिक आयु के (डॉक्टर)प्रोफ़ेसर तैनात हैं। दूसरा भयंकर आरोप यह लगाया गया था कि यहां पर फर्जी फैकल्टी भर रखी है। फर्जी फैकल्टी का मतलब यह होता है कि निरीक्षण के वक्त प्रोफ़सरों को नामचारे के लिये पेश कर दिया जाता है जो वास्तव में काम नहीं कर रहे होते। इस तरह का फ़र्जीवाड़ा एनएमसी व सम्बन्धित यूनिवर्सिटी वालों की मिलीभगत से प्राय: प्राइवेट मेडिकल कॉलेज वाले करते रहते हैं।

पुलिस की तरह आकर धमकी यूनिवर्सिटी की टीम में 6 वरिष्ठ प्रोफ़ेसर थे। ये लोग आकर एकदम ऐसे टूट कर पड़े जैसे यहां कोई बहुत बड़ा अपराधी गिरोह सक्रिय हो। 6 प्रोफेसरों की यह टीम दो-दो की जोड़ी में बंट कर कॉलेज एवं अस्पताल का निरीक्षण करने में जुट गई। तमाम कार्यरत (डॉक्टर) प्रोफ़ेसरों की पूरी कुंडली खंगाली गई, एक भी 70 वर्ष से अधिक आयु का शिकार इन शिकारियों को नही मिल पाया। इसके अलावा एक भी डॉक्टर प्रोफ़ेसर यह टीम नहीं ढूंढ पाई जिसका कि नाम फैकल्टी रजिस्टर में दर्ज हो और वह उपस्थित न हो। इस टीम की बेशर्मी की इंतहा तो तब प्रकट हुई जब आकस्मिक छुट्टी पर गये एक फैकल्टी को उन्होंने मुद्दा बनाने का प्रयास किया।

जानकार बताते हैं कि उक्त झूठी शिकायत ईएसआई मुख्यालय में बीते करीब 10-12 दिन से आई पड़ी थी। इसके बावजूद उन लोगों ने इसकी सूचना यहां देने की जरूरत नहीं समझी। माना जा रहा है कि वे लोग तो इस संस्थान की होने वाली सम्भावित फ़जीहत पर खुशियां मनाने की तैयारी कर रहे थे लेकिन उनकी आशाओं पर तब वज्रपात सा हो गया जब इस संस्थान के विरुद्ध छापामारों को लेशमात्र भी सबूत नहीं मिला। संस्थान के डीन डॉ. असीम दास अगले दिन से ही छुट्टी पर चल रहें हैं। उनकी इस छुट्टी के पीछे, उनका मुख्यालय के व्यवहार से आहत होना समझा जा रहा है।

विदित है कि एनएमसी एवं मेडिकल यूनिवर्सिटी द्वारा समय-समय पर यहां किये गये निरीक्षणों में ऐसी कोई कमी नहीं पाई थी जिसके आरोप उक्त झूठी शिकायत में लगाये गये हैं। यदि ये आरोप सही सिद्ध हो जाते तो एनएमसी व यूनिवर्सिटी दोनों ही मिलीभगत के दोषी पाये जाते। इसलिये इस शिकायत का निराकरण करना तो आवश्यक बनता था, लेकिन इसके लिये जो तरीका अपनाया गया वह निहायत ही निंदनीय समझा जा रहा है। अपनाए गये इस तरीके से लगता है कि ईएसआई मुख्यालय एवं हरियाणा सरकार को अपने इस संस्थान पर कोई भरोसा ही नही है। जानकार बताते हैं कि सोमवार व मंगलवार की मध्य रात्रि को चंडीगढ़ से यूनिवर्सिटी को आदेश आया कि प्रात: 10 बजे इस संस्थान पर छापा मारा जाए। लिहाजा सुबह-सुबह सवेरे आठ बजे टीम रोहतक से रवाना हुई।

'मजूदूर मोर्चा' गतांक में लिख चुका है कि रोहतक मेडिकल कॉलेज एवं यूनिर्सिटी के डॉक्टर, ईएसआई संस्थान की उत्कृष्टता एवं प्रगति से बुरी तरह कुंठाग्रस्त हैं। वे हर समय इस मौके की ताक में रहते हैं कि कब इस संस्थान को नीचा दिखाया जा सके। टीम में एक डॉक्टर कुलदीप ललड जो कॉर्डियोलॉजी विभाग के हेड हैं को इस बात से बड़ी चिढ़ थी कि उनके यहां के एक डॉक्टर को कैथलैब का काम सीखने के लिये वाइस चांसलर ने यहां भेजा था जो ट्रेनिंग करे जा भी चुका।

जाहिर है कि डॉ. कुलदीप इस लायक नहीं समझे गये कि वे अपने स्टाफ़ को बेहतर ट्रेनिंग दे सकें।

संदर्भवश छापामार टीम को यह भी बता दिया गया कि इस संस्थान में डब्ल्यूएचओ, आईसीएमआर, डीबीटी, साइंस और टैक्नोलॉजी विभाग तथा ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से पचासों करोड़ के रिसर्च प्रोजेक्टों पर काम चल रहा है। इसके विपरीत रोहतक में एक बार जैसे-तैसे डेढ़ करोड़ के प्रोजेक्ट आ गये थे जो फ्लॉप हो गये थे। इसके अलावा इस संस्थान में एनएबीएच द्वारा एक्रेडेटिड एथिक्स कमेटी भी मौजूद है जिसके चलते यहां प्रोजेक्ट आते हैं।

रोहतक में ऐसी किसी कमेटी का वजूद नहीं है। रोहतक वालों को इससे भी तकलीफ है कि ईएसआई मेडिकल कॉलेज में इमरजेंसी मेडिसिन जैसे विषय पर पीजी कोर्स शुरू हो गया है और वो इस तरह के कोर्स शुरू करने में पिछड़ते जा रहे हैं।

इस संस्थान की उत्कृष्ट फैकल्टी द्वारा तैयार रिसर्च पेपर अंतरराष्ट्रीय मेडिकल जर्नल लॉन्सेट जैसी प्रतिष्ठत पत्रिका में भी छप चुके हैं जबकि रोहतक वालों का इस क्षेत्र में कहीं नामोनिशान तक नहीं है।

जानलेवा हमला करने वालों को शरीफ समझती है आदर्श नगर थाने की पुलिस, इसलिए नहीं कर रही गिरफ्तार

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) डीजीपी शत्रुजीत कपूर प्रदेश में संगठित अपराध खत्म करने का दावा कर रहे हैं तो उनके आदर्श नगर थाने की पुलिस ऐसे अपराधियों को संरक्षण देने में जुटी है। अंबरीश शुक्ला और उसके दोस्त राहुल शर्मा पर 12-15 हथियारबंद बदमाशों ने जान से मारने की नीयत से हमला कर दिया, उनकी कार तोड़ डाली। पीड़ित के अनुसार हमलावरों ने एसएचओ कुलदीप को फोन कर बताया कि उन्होंने अंबरीश और उसके दोस्त पर गलती से हमला कर दिया। पुलिस भी हमलावरों की बात से संतुष्ट होकर चुपचाप बैठ गई। कानून का पालन कराने और कानून की रक्षा करने वाले पुलिस अधिकारी के मुंह से अपराधियों को निर्दोष बताए जाने से पीड़ित की न्याय मिलने की उम्मीद खत्म हो गई है।

अंबरीश शुक्ला एक आईटी कंपनी के गुड़गांव स्थित कार्यालय में काम करते हैं। उनके बड़े भाई का चुंगी नंबर 5 शिवा कॉम्प्लेक्स, बल्लभगढ में होटल रेडिसन पिंक के नाम से होटल है। 7 सितंबर की शाम वह होटल में रुके थे। आठ सितंबर की सुबह जब उठे तो उनके कमरे से लैपटॉप और 20 हजार रुपये गायब थे। होटल के सीसीटीवी कैमरों में एक युवक को उनके कमरे से लैपटॉप लेकर निकलते देखा गया। उन्होंने सीसीटीवी फुटेज आदर्श नगर थाने की पुलिस को सौंप कर चोरी की एफआईआर दर्ज करवाई।

दूसरे दिन करीब दो बजे वह दोस्त राहुल शर्मा के साथ आदर्श नगर थाने से एफआईआर कॉपी लेकर होटल लौटे। जैसे ही वह दोनों कार से उतर कर होटल की ओर बढ़े, बाइक पर आए एक युवक ने उनकी कार में जोरदार टक्कर मारी और फिर हथौड़े से कार शीशा तोड़ दिया। उसके साथ तीन-चार बाइकों पर लोहे का रॉड, डंडा, हथौड़ा, बेसबॉल बैट, सरिया आदि से लैस करीब 12 बदमाश भी थे। अंबरीश और उनका दोस्त कुछ समझ पाते, बाइक सवार युवक ने इशारा किया तो सब उन्हें मारने दौड़ पड़े, किसी तरह होटल में घुस कर उन्होंने अपनी जान बचाई। दोस्त राहुल भी जान बचाने के लिए भाग कर पास ही एक घर में घुस गया। अंबरीश ने 112 पर कॉल कर घटना की जानकारी दी। इससे पहले कि पुलिस आती, हमलावर उनकी कार के शीशे आदि तोड़कर धमकियां देते हुए फरार हो गए। उन्होंने आदर्श नगर थाने में इसकी भी एफआईआर दर्ज कराई।

घटना को एक सप्ताह बीत चुका है लेकिन पुलिस अभी तक न तो चोर को पकड़ पाई है और न ही जानने बूझने के बावजूद हमलावरों को पकड़ रही है। अंबरीश ने बताया कि वह एसएचओ को रोज ही फोन कर अपने केस की जानकारी लेते हैं। उनके अनुसार एसएचओ कुलदीप के पास हमलावरों का फोन आया था। हमलावरों ने एसएचओ को बताया कि उन्होंने अंबरीश पर गलती से हमला कर दिया था। यही बात एसएचओ ने अंबरीश को बता कर मानो तफ्तीश पूरी कर ली।

पीड़ित अंबरीश शुक्ला

समझने वाली बात यह है कि इंस्पेक्टर कुलदीप को अंबरीश पर हमला करने वालों की पूरी जानकारी है बावजूद इसके वह उन्हें पकड़ नहीं रहे हैं। ऐसा तो नहीं कि हमलावर उस इलाके के रंगदारी, हफ्ता वसूली जैसे गैर कानूनी धंधे करने वाले गिरोह के सदस्य हैं जो हर महीने पुलिस को 'ईमानदारी से' उसका हिस्सा पहुंचा देते हैं। अब हर महीने विभाग की 'सेवा' करने वाले 'सेवको' पर साहब की नजर भला कैसे टेढ़ी हो सकती है, तभी तो एक सप्ताह के बाद भी हमलावर बाहर मौज कर रहे हैं और साहब की कृपा से करते भी रहेंगे।

मान भी लिया जाए कि बदमाशों ने अंबरीश पर गलती से हमला किया था तब भी यह तो तय है कि वह किसी अन्य व्यक्ति को जान से मारने या जिंदगी भर के लिए अपाहिज करने की नीयत से मारने पहुंचे थे, पहचान में गलती होने के कारण अंबरीश फंस गए। हमलावरों की एक फोन कॉल को गीता पर हाथ रख कर ली गई शपथ मानने वाले एसएचओ कुलदीप को क्या इसलिए उन गुंडों को नहीं पकड़ना चाहिए था कि वह किस पर हमला करने वाले थे? किसने उन लोगों को हमला करने की सुपारी दी? हमले का मकसद क्या था?

'बदमाशों' को वारदात करने से पहले ही अपराध की योजना बनाते, उसमें इस्तेमाल होने वाले सामान, हथियारों के साथ गिरफ्तार करने में माहिर पुलिस, इस केस में हमलावरों की सीसीटीवी फुटेज होने के बावजूद उन्हें पहचानने का प्रयास शायद इसलिए नहीं कर रही है क्योंकि वह उन्हें संरक्षण देती हो। हमलावरों को शरीफ बताने के प्रयास में जुटी पुलिस पीड़ित का लैपटॉप चोरी करने वाले को भी नहीं तलाश पा रही है। जबकि पुलिस के पास चोर की सीसीटीवी फुटेज मौजूद है।

पुलिस के व्यवहार से निराश अंबरीश शुक्ला को लगता है कि लैपटॉप चोरी करने वाला और उन पर हमला करने वाले सभी एक ही गिरोह के सदस्य हैं। क्योंकि हमला करते समय एक व्यक्ति गालियां देते हुए चिल्ला रहा था मारो साले को इसी ने एफआईआर करवाई है। यदि चोर और हमलावर दोनों एक ही गिरोह के हैं तो यह संदेह भी पैदा होता है कि एफआईआर दर्ज होने की जानकारी उन्हें पुलिस ने ही दी हो, पुलिस संरक्षण से बेखौफ बदमाशों ने एफआईआर से नाराज होकर ही उन पर हमला कर दिया हो।

फिलहाल, पीड़ित डीजीपी शत्रुजीत कपूर और पुलिस आयुक्त राकेश आर्य के अपराधियों पर सख्ती से लगाम लगाए जाने के पाठ को याद कर न्याय मिलने का इंतजार कर रहा है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।